IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 1, February 2020
Impact Factor: 4.819

हिन्दी जाति की अवधारणा और रामविलास शर्मा : समीक्षात्मक अध्ययन - 2

डॉ. अजय कुमार विन्द
असि. प्रो. हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, नानौता, सहारनपुर
drajaybind@gmail.com

जातीय चेतना के निर्माण की प्रक्रिया का जनतंत्र के विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान है। डॉ. शर्मा ने स्पष्ट किया है कि 'जातीय चेतना केवल भाषागत, प्रदेशगत चेतना नहीं है। उसमें साम्राज्य-विरोध, सामन्ती रूढ़ियों का विरोध और समाज को पुनर्गठित करने की धारणाएँ शामिल हैं।' फिलहाल हिन्दी प्रदेशों में साम्राज्य-विरोध और सामन्ती रूढ़ियों के विरोध का स्तर उन गैर-हिन्दी प्रदेशों से बहुत नीचे है, जहाँ जातीय स्वाभिमान की ऊँची लहरें हैं। कार्ल मार्क्स ने जो विश्व दृष्टि सम्पूर्ण मानव जाति को प्रदान की उसकी नजर से डॉ. शर्मा ने हमारे राष्ट्रीय एवं जातीय स्वरूपों के महत्व को पहचान कर उनकी व्याख्या एवं विश्लेषण किया।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in